RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-06
June-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i06.007

भारतीय संस्कृति और हिन्दी

Dr.K.Jayalakshmi

Associate Professor, Department of Languages, SSL, VIT, Vellore -632014 (India)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 June 2020

Keywords
भारतीय संस्कृति, हिन्दी, साहित्य

***Corresponding Author**
Email: kjayalakshmi[at]vit.ac.in

ABSTRACT

भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है बल्कि वह किसी देश की संस्कृति और संस्कारों से जुड़ी होती है। हर भाषा की अपनी समृद्ध संस्कृति और परंपरा हैं। भाषा साहित्य एवं संस्कृति की पहचान है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहित्य और संस्कृति का स्वरूप बनाते हैं। भाषा वह सांस्कृतिक आधार है जो एक दूसरे के पूरक हैं। हर संस्कृति का संरक्षण और विकास में उस देश की भाषा का विकास आवश्यक है ।हिन्दी प्राचीन भाषाओं में से है जिसका इतिहास हजारों वर्ष पुरानी है, और साथ ही हिन्दी साहित्य सर्वश्रेष्ठ है जिसकी विकास यात्रा में हमारी संस्कृति का दर्शन होता है। भाषा, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन इसी कारण महत्त्वपूर्ण हो जाता है। भाषा के माध्यम से हमारी विरासत याने संस्कृति आगे बढ़ती है और इसलिए साहित्य संस्कृति का वाहक है और साहित्य की भाषा उसके रक्षक और पोषक हैं।

भूमिका

"Language is the road map of culture. It tells you where its people come from and where they are going."

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि "मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं ही संस्कृति है।" यह कथन बहुत सही है क्योंकि प्रत्येक देश और जाति की अपनी सभ्यता और संस्कृति है। संस्कृति का संबंध मानव की अंतर्मुखी दशा से है। इसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है और शाब्दिक अर्थ – संस्कार युक्त होना, उन्नति करना,बढ़ना आदि। किसी भी देश की नींव उसकी अपनी संस्कृति होती है। हर देश के जलवायु, आचार–विचार एक देश की संस्कृति से अलग होता है। भाषा संस्कृति की वाहक होती है और भाषा से ही संस्कृति की पहचान संभव है। जीवन व समाज में अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भाषा की जरूरत होती है। भाषा अधिक से अधिक लोगों को जोड़ती है। यह हमारी धरोहर व अस्मिता की पहचान कराती है।

भाषा और संस्कृति का नाता अनान्योश्रित है। यह इसलिए है कि भाषा किसी व्यक्ति, समाज, संस्कृति या राष्ट्र की पहचान है। भाषा एक संस्कृति है जिसके भीतर भावनाएं, विचार और सदियों की जीवन पद्धति समाहित है। यह वह कड़ी है जो परम्पराओं और संस्कृति को जोड़े रखती है। इसे और स्पष्ट रूप से कहे तो जब हम भारतीय परंपरा के अनुसार सम्बोधन करते है तो वह अक्सर हाथ जोड़कर किया जाता है। यह हमें हमारी मर्यादा से परिचित कराती है जो युगों से प्रचलित है। तो दूसरी तरफ 'राम– राम' जैसे शब्दों का प्रयोग भी करते हैं जो हमारी अन्तःस्रावी (endocrine) ग्रंथियों में योग की भाषा में हमारे चक्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः एक भाषा के नष्ट होने का अर्थ संस्कृति, विचार और जीवन पद्धति का मर जाना होता है।

विविधताओं से भरे हमारे देश में हिन्दी भाषा हमें एकता व अखंडता के सूत्र में बांधती है। भारतीय संस्कृति के कई तत्वों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति हिन्दी में कालों से ही लक्षित होने लगती है। इसी के कारण मध्य युगीन साधु संतों से उसे सार्वदेशिक रूप प्रदान किया था। ब्रजभाषा पश्चिम के गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक भारतीय संस्कृति की संवाहिका बनी और अवधी कोसल जनपद को लाँघकर दूर तक फैल गयी। हिन्दी आधुनिक आर्यभाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है, जो विस्तृत भू–भाग तक फैली है। अगर इसके इतिहास को देखे तो यह एक हजार वर्ष से हमारी सामाजिक संस्कृति की वाहिका रही है। यह देश के विभिन्न प्रांतों की प्रमुख संपर्क भाषा एवं धार्मिक सांस्कृतिक तथा व्यापारिक केन्द्रों में आदान–प्रदान का माध्यम रही है।

भाषा साहित्य और संस्कृति का आपस में अनोखा संबंध है जिससे साहित्य और संस्कृति की पहचान है। वाल्मीकि और व्यास उस जनपद के कवि थे जो आज हिन्दी प्रदेश है। कालिदास और भवभूति वे कवि है जिनका जनपद सांस्कृतिक केन्द्रों से संबद्ध थे। हमारे वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत तथा कालिदास और भवभूति के नाटक और काव्य हिन्दी के सांस्कृतिक इतिहास के अभिन्न अंग है। जैसे इंगित किया गया हिन्दी भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक है और इसका इतिहास बहुत पुराना है। 1000 से लेकर 1400 ई. के कालखंड को देखे तो यह ऐसा समय था, जब

RRIJM 2015, All Rights Reserved

हिन्दी भाषा का निर्माण हो रहा था और हिन्दी साहित्य भी अपना रूप ग्रहण कर रहा था।

इस समय बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत में दिखाई पड़ रहा था । हिन्दी साहित्य में इसे आदिकाल नाम से अभिहित किया गया जहां हमें वीर रसात्मक काव्यों के साथ–साथ बौद्धकालीन संस्कृति का परिचय मिलता है। सिद्धों और नाथों का साहित्य का झलक मिलती है। सिद्धों ने जिस भाषा शैली में अपनी रचनाएं लिखी उसे संध्याभाषा कहा गया। इसी भाषा में हिन्दी का वह आदि रूप छिपा हुआ था जो आगे जाकर प्राचीन भारतीय संस्कृति का संरक्षण कर उसका विकास भी कर पाया। सिद्धों और नाथों के साहित्य ने हमारी सांस्कृतिक परिदृश्य में एक अहम् भूमिका निभाई है। भारत के अन्य प्रांतों में जैसे गुजरात, राजस्थान और दक्षिण में जैन साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का पोषण कर रही थी। अपभ्रंश के विख्यात कवि स्वयंभू ने अपने ग्रंथ 'पउमचरिउ' में रामकथा को तत्कालीन संस्कृति के परिदृश्य में प्रस्तुत किया। इस तरह हिन्दी के आदिकाल में हमें रासो साहित्य के समय की संस्कृति एवं मूल्यों का परिचय मिलता है।

14 वीं शताब्दी में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्वर्णकाल कहा है। शुक्लजी ने भक्ति को धर्म का रसात्मक रूप कहा है क्योंकि भारत के कोने–कोने में हिन्दी के प्रमुख रूप ब्रजभाषा ने लोकप्रियता दिलाई। यह वह समय था जब भारत में इस्लामी संस्कृति अपनी जड़े जमा चुकी थी। इस काल में मात्र भाषा के स्तर पर ही नहीं अन्य स्तरों पर भी भारतीय संस्कृति में परिवर्तन का दौर शुरू हो चुका था। और इस परिवर्तन को हिन्दी ने न केवल ग्रहण किया बल्कि उसे अभिव्यक्त भी किया। हिन्दी का रूप अवधी और ब्रज संस्कृति की अभिव्यक्ति हो रही थी। तुलसीदास, सूरदास, कबीर आदि की रचनाएं इसके उत्तम उदाहरण है।

उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल नाम से अभिहित कर हमारी संस्कृति का एक नया दौर देखने को मिलता है। इस काल में हिन्दी बहुआयामी रूप वहन करती है। बिहारी, आलम, जायसी जैसे कवियों की रचनाएं इसके उत्तम उदाहरण हैं। आगे जाकर हिन्दी भाषा को एक नयी भंगिमा एवं नई दृष्टि में देखा जा सकता है जहां भारतीय संस्कृति का एक नया रूप प्रस्फुटित होता है। भारतेन्दु, प्रतापनरायाण मिश्र, प्रेमघन जैसे लेखक जनसाधारण को उनकी वास्तविक दशा से परिचित कराना चाहते थे; अतः जनमानस की भाषा का प्रयोग करने लगे और इस स्थिति में हिन्दी सांस्कृतिक भाषा बनने की दिशा में उन्मुख हुआ। भाषा राष्ट्रीय चेतना का अनिवार्य अंग बना, जो देश को संगठित रूप में बाँध रखने में सफल हुई और हिन्दी का शंख फूंका गया जिससे सांस्कृतिक विकास को गति मिला।

महावीरप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार देशव्यापी भाषा के लिए आवश्यक है कि हमारे विभिन्न भाषाओं में प्रचलित उत्तम साहित्य को देशव्यापी भाषा में उतारा जाए जो हिन्दी है। वे हिन्दी को एक सफल अनुवाद की भाषा के रूप में देखने चाहते थे क्योंकि सफल अनुवाद की भाषा किसी देश की सांस्कृतिक भाषा बन सकती है। 1935 के बाद 'प्रगतिवाद' के आंदोलन ने हिन्दी के सांस्कृतिक विकास को एक नया मोड़ प्रदान किया। राजनीतिक क्षेत्र में उग्रवादी चिंतनधारा का जन्म हुआ तो दूसरी ओर भाषा एवं साहित्य के धरातल पर भारतीय ग्राम एवं अंचलों तथा उनके समस्याओं की ओर हमारा परिचय हुआ। राहुल सांकृत्यायन, बनरसीदास चतुर्वेदी, प्रेमचंद, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, उदयशंकर भट्ट,देवेन्द्र सत्यार्थी, रांगेय राघव, शैलेश मटियानी आदि लेखकों की रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं क्योंकि इन्होंने अल्पज्ञात और अज्ञात क्षेत्रों की जीवन प्रणालियों से हिन्दी जगत को परिचित कराया। इन लेखकों ने इन अंचल क्षेत्रों के रहन–सहन, वेश–भूषा, लोक विश्वास, त्यौहार–पर्व, नृत्य–गीत, रीति–रिवाज आदि का सूक्ष्म चित्रण कर पाठकों को स्थानीय एवं जातियों जीवन से अवगत कराया।

इस अवधि में हिन्दी की सांस्कृतिक समृद्धि का दायित्व अहिंदी भाषी लेखकों ने भी लिया था जिससे भारतीय संस्कृति को दर्शाने वाले भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के हिन्दी अनुवादों से भाषा की नयी अर्थ छायाएँ नजर आने लगी। इसी प्रकार यात्रा विवरण, हिन्दी की भाषा शैली को निखरते हैं। राहुल सांकृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी, धर्मवीर भारती, अज्ञेय, मोहन राकेश, अमृतराय का उल्लेख किया जा सकता है।

हिन्दी न केवल भारत में समृद्ध है बल्कि विदेशों में भी इसने अपनी जड़ जमा रखी है। विदेशों में जहाँ भारतीय मूल के लोग रहते हैं, भारतीय संस्कृति की संरक्षण अपनी भूमिका सफल निर्वहन की कोशिश कर रही है। मारीशस, सूरीनाम, ट्रिनीडाड में हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार और उसके उन्नयन से भारतीय संस्कृति अपनी पहचान कायम रखने में सक्षम हुई है। अफ्रीका के सारे द्वीप,लंदन के साउथ हाल, गुयाना, फीजी में हिन्दी बोली जाती है। अपनी भाषा से हमारी पहचान बनती है और यह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का एक अभिन्न अंग है।

निष्कर्ष

संस्कृति और भाषा का अटूट संबंध है। किसी भी संस्कृति की विकास यात्रा का मापना उसकी भाषा की विकास यात्रा द्वारा किया जा सकता है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक आदि ने जहाँ सूत्र और संस्कृति की स्थापना की वहीं अष्टध्यायी जैसे ग्रंथों की रचना से भाषा का सौष्ठव बढ़ा। भाषा वह

RRIJM 2015, All Rights Reserved

त्रिवेणी है, जिसकी धाराए व्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक है। भारत जैसे विशाल देश में जहाँ भाषाओं की कोई सरिताएं प्रवाहमान है वह संस्कृति रूपी सागर में जाकर मिलती है। यही कारण है दक्षिण के सुब्रह्मणय भारती का स्वर उत्तर के मैथिलीशरण गुप्त से मेल खाता है। अलवार संतों की वाणी उत्तर भारत के संतों से मिलकर संगम का रूप लेती है। वाल्मिकी और कालिदास से शुरू होते, कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर से महादेवी वर्मा तक की यात्रा करें, तो हमें पता चलता है कि हमारा अक्षय कोष हमारी संस्कृति की है। अतः कह सकते हैं कि भाषा और संस्कृति दोनों एक दूसरे की पूरक है,एक सिक्के के दो पहेलू हैं। अतः एक भाषा के रूप में हिन्दी मात्र भारत की पहचान ही नहीं बल्कि हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक एवं परिचायक है। इसलिए यह बात सत्य है कि "हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. शंकर दयाल शर्मा, हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति, किताब घर , नई दिल्ली , 2019
2. विमलेश कांति वर्मा, मालती, भाषा साहित्य और संस्कृति, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली,2016

RRIJM 2015, All Rights Reserved